Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

# ॥ जयापार्वती जागरण विधि ॥

## ॥ जय माँ जयापार्वती ॥

# Full Disclaimer

*This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.*

*This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.*

*Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.*

*Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.*

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

# ॥ अंतिम रात्रि का जागरण ॥

## जागरण का अर्थ

जयापार्वती व्रत के अंतिम उपवास दिन की रात शिव-पार्वती के स्मरण में जागरण किया जाता है। परिवार या समुदाय भजन, आरती, कथा और शांत ध्यान से रात बिताते हैं। इसे गुजरात में जयापार्वती जागरण कहा जाता है।

## संध्या की तैयारी

पूजा स्थान साफ करें, शिव-पार्वती के चित्र के सामने सुरक्षित दीप रखें और फूल तथा जल अर्पित करें। सभी सहभागी अपनी सुविधा से बैठें। छोटे बच्चों के लिए भोजन, पानी और नींद की व्यवस्था सामान्य रूप से रखें।

## भजन और कथा

गणेश वंदना के बाद शिव और गौरी के भजन गाएँ। वामन-सत्या की कथा पढ़ें, आरती करें और बीच-बीच में शांत नाम-स्मरण करें। तेज आवाज से पड़ोसियों को असुविधा न हो; दीप या मोमबत्ती पूरी रात बिना निगरानी न जलाएँ।

रात्रि भर जागना हर व्यक्ति की क्षमता में नहीं होता। बुजुर्ग, बच्चे, बीमार व्यक्ति या सुबह जरूरी काम पर जाने वाले अपनी सुविधा से कुछ समय पूजा करके विश्राम कर सकते हैं।

# ॥ जागरण के बाद पारण ॥

## रात का सरल क्रम

संध्या आरती, कथा, कुछ अंतराल पर भजन और शांत ध्यान का क्रम रख सकते हैं। बीच में पानी तथा अपनी आहार रीति के अनुसार हल्का भोजन लें। थकान होने पर बैठकर जप करें; स्वास्थ्य बिगड़ रहा हो तो सो जाएँ।

## सुबह की पूजा

अगली सुबह स्वच्छ होकर माता पार्वती और भगवान शिव को प्रणाम करें। फूल, अक्षत और प्रसाद चढ़ाएँ तथा परिवार के मंगल के लिए प्रार्थना करें। स्थानीय रीति से ज्वारे का समापन करें।

## पारण

सुबह की पूजा के बाद व्रत खोलें। कुछ परिवार नमक और गेहूँ की रोटी सहित सामान्य भोजन करते हैं। भोजन की मात्रा अपनी भूख और स्वास्थ्य के अनुसार रखें। यदि किसी को चक्कर या अत्यधिक कमजोरी हो तो पूजा समय की प्रतीक्षा में आवश्यक भोजन या चिकित्सा न टालें।

जागरण का भाव भक्ति और सहभागिता है। अनिद्रा को धार्मिक बाध्यता न बनाएँ; अपनी परिस्थिति के अनुरूप पूजा का समय और स्वरूप चुनें।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥